बाप जिनको रचता कहा जाता है। किसको रचता?नई दुनियां का रचता। नई दुनियां को कहा जाता है स्वर्ग वा सुखधाम। भल सुखधाम नाम कहते रहते हैं ;परंतु समझते नहीं हैं। कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। अब वो तो हो गया छोटा मंदिर। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। बेहद के मालिक को जैसे कि हद का मालिक बना देते हैं। कृष्ण के छोटे से मंदिर को सुखधाम कह देते हैं। बुद्धि में नहीं आता है कि वो तो विश्व का मालिक था। भारत ही में रहने वाला था। कितना फर्क है। तुमको भी पहले कुछ पता नहीं था। बाप को तो सब कुछ पता है। वो सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। अब तो तुम बच्चे भी जानते हो। दुनियां में यह भी कोई को पता नहीं है कि ब्र.वि.शं. कौन हैं। शिव तो हैं उंच ते उंच भगवान। अच्छा, फिर प्रजापिता ब्रह्मा कहां से आया?हैं तो मनुष्य ही ना। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहीं चाहिए ना जिससे ब्राह्मण पैदा हो। प्राजापिता माना ही मुख से एडॉप्ट करने वाला। तुम हो मुखवंशावली। अब तुम जानते हो कि कैसे ब्रह्मा को बाप ने अपना बनाकर मुखवंशावली बनाई। इनमें प्रवेश भी किया फिर कहा कि यह हमारा बच्चा भी है। तुमको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा कहां से नाम पड़ा। कैसे पैदा हुआ कुछ भी नहीं जानते हैं। सिर्फ महिमा ही गाते हैं कि परमपिता परमात्मा उंच ते उंच है ;परंतु यह कोई की बुद्धि में नहीं आता है कि उंच ते उंच बाप है। वो हम सर्व आत्माओं का पिता है। वो भी बिंदु रूप ही है। उनकी बुद्धि में सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है। अब तुमको भी नालेज मिली है। आगे यह ज्ञान जरा भी नहीं था। मनुष्य सिर्फ कहते रहते हैं कि ब्र.वि.शं. ;परंतु जानते नहीं हैं तो यह उन्हीं को तो समझना है ना। नहीं जानते हैं तो उनको ही तो बेसमझ कहा जाता है ना। अब तुम समझदार बने हो। जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर है। हमको भी ज्ञान सुनाते हैं। पढ़ाते हैं। सारी दुनियां समझती है कि कृष्ण पढ़ाते हैं। क्या पढ़ाते हैं?गीता। समझते हैं गीता से राजयोग सिखाया। राजयोग के लिए तो फिर विनाश भी जरूर चाहिए ; क्योंकि राजयोग है ही सतयुग के लिए। जरूर पुरानी दुनियां का विनाश चाहिए। उसके लिए यह महाभारत लड़ाई है। आधा कल्प से लेकर तुम भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते आये हो। अब तो बाप से सुनते हो। बाप कोई शास्त्र नहीं बैठकर सुनाते। वो सब हैं भक्तिमार्ग के। भक्ति जो करते हैं वो भी शास्त्रों में नूंध है। जो भक्ति में है उनको ज्ञान का पता नहीं हो सकता। वो सब ठहरी भक्ति। जप,तप करना ,शास्त्र आदि पढ़ना सब भक्ति है। सभी भक्तों को भक्ति का फल चाहिए ;क्योंकि मेहनत ही करते हैं भगवान से मिलने के लिए ;परंतु भक्ति से कोई को भगवान मिल नहीं सकता। हां, जब खुद भगवान आकर अपना परिचय देवे तब भक्ति को छोड़कर ज्ञान लेवें। ज्ञान से सदगति, भक्ति से दुर्गति। वो दोनों इकट्ठे तो चल नहीं सकते। अभी तो है ही भक्ति का राज्य। सभी भक्ति है। हर एक के मुख से ओ गॉड फॉदर जरूर निकलेगा। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप ने अपना परिचय दिया है कि मैं भी छोटी बिंदी हूँ। मुझे ही ज्ञान सागर कहते हैं। मुझ बिंदी ही में सारा ज्ञान भरा हुआ है। कोई भी विद्वान, आचार्य आदि की बुद्धि में यह नहीं है। आत्मा में ही नालेज रहती है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। वो है सुप्रीम सोल। सुप्रीम अर्थात् सबसे उंच ते उंच। पतित–पावन बाप ही सुप्रीम है ना। मनुष्य हे भगवान कहेंगे तो शिवलिंग ही याद पड़ेगा। वो भी यथार्थ रीति से नहीं। एक जैसे कि आदत पड़ गई है कि भगवान को याद करना है। भगवान ही सुख–दुःख देता है। ऐसे कह देते हैं। अभी तुम ऐसे नहीं कहेंगे। अब तुम जानते हो कि सतयुग में सुखधाम था। दुःख का तो नाम नहीं था। कलियुग में है ही दुःखधाम। सुख का नाम भी नहीं है। उंच ते उंच भगवान। वो तो सब आत्माओं का बाप है। शरीर के बाप को तो सभी जानते ही हैं ;परंतु यह किसी को भी पता नहीं है कि आत्माओं का बाबा भी है। कहते भी हैं कि हम सब ब्रदर्स हैं। तो जरूरी है कि सब एक बाप के बच्चे ठहरे ना। बीच में कोई कह देते कि वो तो सर्व

व्यापी है। तेरे में है ,मेरे में है। अरे, तुम आत्मा हो। यह तो तुम्हारा शरीर है। फिर तीसरी चीज हो कैसे सकती है?आत्मा को परमात्मा थोड़े ही कहेंगे। जीवात्मा कहा जाता है। जीव परमात्मा नहीं कहा जाता है। फिर परमात्मा सर्वव्यापी भला कैसे हो सकता है?वो सर्वव्यापी होता तो फिर फादरहुड हो जावे। फादर को फादर ही से वर्सा काहे का मिलेगा?बाप से तो बच्चा ही वर्सा लेता है। सभी ही फादर तो फिर बाबा किनको कहें?इतनी छोटी सी बात भी कोई की समझ में नहीं आती है। तब बाप कहते हैं कि कितने बेसमझ बन गये हैं। हम तुमको आज से 5000वर्ष पहले कतना समझदार बनाकर गये थे। हेल्दी,वेल्दी,समझदार। इससे जास्ती समझदार कोई हो नहीं सकता। अब तुमको जो समझ मिलती है वो वहां नहीं रहेगी। वहां यह थोड़े ही मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगे। यह पता हो तो फिर सुख की भासना ही नहीं आवे। यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। ब्राह्मण ही अधिकारी रहते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि अभी हम ब्राह्मण वर्ण के हैं। ब्राह्मण ही निमित्त बनते हैं। ज्ञान ब्राह्मणों को ही सुनाते हैं। ब्राह्मण ही फिर सबको सुनाते हैं। गायन भी है कि भगवान ने आकर स्वर्ग की स्थापना की थी। राजयोग सिखाया था। उंच ते उंच बाप ने क्या आकर सिखाया वो तुम जानते हो। और सभी के लिए तो जानते हैं। कृष्ण जयंती भी मनाते हैं। समझते हैं कि वो तो वैकुंठ का मालिक था। वो विश्व भर का मालिक था ये बुद्धि में नहीं आता है। जब राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। उनका ही सारे विश्व पर राज्य था और गंगा के किनारे था। अब तुमको यह कौन समझा रहे हैं?भगवानोवाच्य। बाकी वो सब तो भक्तिमार्ग के ही शास्त्र आदि सुनाते हैं। यहां तो खुद भगवान सुना रहे हैं। अभी तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। सारी दुनियां घोर अंधेरे में है। गाया भी जाता है ज्ञान सूर्य प्रगटया अज्ञान अंधेरा विनाश। तुम अर्थ को जानते हो। वो लोग तो जो बोलते हैं सो ही अनर्थ। उल्टा ही समझाते रहते हैं। ओम का अर्थ कितना लम्बा कर दिया है। ओम अर्थात् अहम् आत्मा। मम शरीरा। आत्मा परमधाम की रहने वाली है। वो दूर देश से आते हैं ना। उसको निराकारी दुनियां कहा जाता है। तुमको ही यह बुद्धि में है कि हम शांतिधाम के रहने वाले हैं। फिर हम आकर 21जन्मों की प्रारब्ध भोगेंगे। तुमको तो कितनी खुशी होनी चाहिए। थैया2 अंदर में होनी चाहिए। बेहद का बाप शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। वो है ज्ञान का सागर है। सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। बाप को याद करते हैं तो (जरूर) बाप आये थे। जयंति भी मनाते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो। तो कितनी खुशी होनी चाहिए कि हमको भगवान पढ़ा रहे हैं। कहते हैं बाबा हमने आपको अपना वारिस बनाया है। बच्चा बनाया है। बाप बच्चों पर वारी जाते हैं। बच्चे फिर कहते हैं कि भगवान आप जब आवेंगे तब हम आप पर वारी जावेंगे अर्थात् बच्चा बन जावेंगे। यह भी अपना बच्चों को ही वारिस बनाते हैं। बाबा कैसे वारिस बनावेंगे यह भी गुह्य बात है ना। अपना सब कुछ एक्सचेंज करना इसमें बुद्धि का काम है। गरीब तो झट एक्सचेंज कर देंगे। साहुकार मुश्किल ही करेंगे। जब तक कि पूरी रीति ज्ञान नहीं उठावें। इतनी हिम्मत नहीं रहती है। गरीब तो झट कह देते हैं कि बाबा हम तो आपको ही वारिस बनावेंगे। हम पास रखा ही क्या है?वारिस बनाकर फिर शरीर निर्वाह भी अपना करना है। युक्तियां बहुत बताते हैं। बाप तो सिर्फ देखते हैं कि कोई पापकर्म में तो पैसे खराब नहीं करते हैं। मनुष्य को पुण्यात्मा बनाने में पैसे लगाते हैं। सर्विस भी कायदेसिर करते हैं?यह पूरी जांच करेंगे। कितना निकाल सकते हें वो सब राय देंगे। धंधे में ईश्वर अर्थ निकालते थे ना। वो तो था इनडायरैक्ट। अभी तो बाप डायरैक्ट आये हैं। मनुष्य समझते हैं कि हम जो कुछ करते हैं उनका फल दूसरे जन्म में ईश्वर देते हैं। कोई गरीब दुःखी है तो समझेंगे इस जन्म का कर्म ही ऐसा किया हुआ है। अच्छे कर्म किये हैं तो सुखी हैं। अभी कर्मों की गति बाप बैठ समझाते हैं। रावणराज्य में तुम्हारे कर्म सभी विकर्म हो जाते हैं। अच्छे कर्मों का करके अल्प

काल के लिए सुख मिलता है। ऐसे नहीं कि सारी लाइफ भर ही कोई हेल्थ–वेल्थ रहती है। नहीं, कोई ना कोई रोग खिटपिट जरूर होगी ;क्योंकि अल्पकाल का सुख है। अभी बाप कहते हैं कि मैं डायरैक्ट आया हूँ। अभी यह रावण्राज्य ही खलास होना है। रावणराज्य ही अलग है। रामराज्य अलग है। रामराज्य को अब शिवबाबा स्थापन कर रहे हैं। बाकी शास्त्रों में जो यह बातें लिख दी हैं कि राम की सीता चुराई गई। यह हुआ। ऐसी कोई बात है नहीं। वहां तो दुःख का नाम नहीं होता। कहते भी हैं राम राजा.....तो सीता भी तो राम के साथ ही आ गई ना। वहां पर फिर अधर्म की बात हो ही कैसे सकती है?रामायण ही कितनी लम्बी–चौड़ी बाह्यात बातों से भर दी है। सभी वाह्यात बातें हें। ऐसे किताब पढ़ने से कोई भगवान मिल सकता है क्या?कितनी बातें बनाई हैं। यह फिर भी बनेगी। बाप कहते हैं व्यास को कैसे ,कहां से अकल आया जो इतनी लम्बी कहानी बैठ बनाई है। कमाल की बात है रामायण बनाना। अब तुम समझते हो कि वो सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान तो बिल्कुल ही अलग है। भक्ति अलग है। तुम जानते हो कि हम फिर भी भक्ति को पास करेंगे। फिर बाप आकर ज्ञान देंगे। फिर भी भारत हेवन बनेंगा। भारत कितना साहुकार था। अब क्या बन गया है?तुम जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत ही फिर गरीब हो पड़ता है। भारत ही आज से 5000वर्ष पहले स्वर्ग था। इन (ल.ना.) का राज्य था। पहले (सदी) इनकी चली। कृष्ण प्रिंस था। फिर शादी की तो राजा बना। नारायण नाम पड़ा। यह भी तुम तो अभी समझते हो। तो तुम्हें वंडर लगता है। बाबा आप रचता और रचना की नालेज सुनाते हो। आप हमको पढ़ाते हो। बलिहार जावें। हमको तो सिवाय एक बाप के और कोई को भी याद नहीं करना है। अंत तक पढ़ना है तो जरूर टीचर को याद करना है। स्कूल में टीचर को याद करते हैं ना। उन स्कूलों में तो कितने टीचर्स होते हैं। हर एक दर्जे का टीचर अलग। यहां तो एक ही टीचर है। कितना लवली बाप, लवली टीचर है। आगे भक्तिमार्ग में अंधश्रद्धा से याद करते थे। अभी तो डायरैक्ट बाप पढ़ाते हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। फिर भी कहते हैं बाबा भूल जाते हें। पता नहीं हमारी बुद्धि आपको याद क्यों नहीं करती है?गाते भी हैं कि ईश्वर की गत–मत न्यारी है। बाबा आपकी मत,गत और सदगति की तो बिल्कुल ही न्यारी है। वंडरफुल है। ऐसे2 बाप को याद करना चाहिए। स्त्री अपने पति के गुण गाती है ना। बड़ा अच्छा ,बड़ा मीठा। यह2 उनकी प्रॉपर्टी है। अंदर2 में खुश होती रहती है। यह तो पतियों का भी पति है। बापों का बाप है। इनसे कितना हमको सुख मिलता है। और सबसे तो दुःख ही मिलता है। हां, टीचर ही से सुख मिलता है ;क्योंकि पढ़ाई से इनकम होती है। बाकी गुरू से क्या मिलता है?अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि इन गुरुओं को तो छूना भी नहीं चाहिए। यह तो दुर्गति में ले जाते हैं। आजकल तो गुरू की इतनी सेवा करते हैं जो कि पति की भी नही करते होंगे। पांव धोकर पीते हैं। जबकि कहते हैं कि पति ही परमेश्वर है तो साधुओं के पास जाकर क्या करते हैं?अभी इस भक्तिमार्ग से अपने को और दूसरों को बचाना है। गुरू हमेशा किया वानप्रस्थ अवस्था में। बाप भी कहते हैं कि मैं वानप्रस्थ में आया हूँ। यह भी वानप्रस्थी तो मैं भी वानप्रस्थी। यह सब मेरे बच्चे हैं। बाप, टीचर ,गुरू तीनों ही इकट्ठे हैं। बाप, टीचर भी बनते हैं तो गुरू बनकर साथ भी ले जाते हैं। उस एक बाप की ही महिमा है। यह बातें कोई शास्त्रों आदि में नहीं हैं। सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज कोई समझा नहीं सकते। रचता को ही नहीं जानते हैं। अब रचता अपनी और रचना की पहचान दे रहे हैं बाबा हर बात अच्छी रीति समझाते रहते हैं। इससे उंची नालेज कोई होती नहीं है। ना जानने की दरकार ही रहती है। हम सब कुछ जानकर विश्व का मालिक बन जाते हैं। और जास्ती क्या बनेंगे?बच्चों की बुद्धि में यह हो तब खुशी में रहें और बाप की याद में रहें। पुण्यात्मा बनने लिए याद में जरूर रहना है। इसमें ही माया विघ्न डालती है। भूल जाते है। माया के तूफान बहुत आते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। ओम।